P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III * Issue-XII*August-2016

प्राचीन भवनों को वास्तु सम्मत बनाने हेतु भवन निर्माता का दृष्टिकोण (एक अध्ययन)

पल्लवी सक्सेना
अतिथि व्याख्याता,
गृहविज्ञान विभाग,
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
शिवपुरी, म0प्र0

रानू सक्सेना
अतिथि व्याख्याता,
गृहविज्ञानविभाग,
शासकीय कन्या महाविद्यालय,
दतिया,म0प्र0

सारांश

वास्तु से आशय रहने के स्थान से है जिसे संस्कृत में वास्तु स्थलः के नाम से एवं वैज्ञानिक दृष्टि से वास्तुशास्त्र के नाम से जाना जाता है। वर्तमान में गृह निर्माण की दृष्टि से महत्वपूर्ण कारक है जो घर मे निवास करने वाले लोगों के जीवन में खुशियॉ , समृद्धि लेकर आता है एवं वास्तु सम्मत आवास में सकारात्मक ऊर्जा का प्रसार करता है। वास्तु वेदों का अंश है वहीं यह वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर भी आधारित है। प्रस्तुत शोध में वास्तु अनुरूप भवन निर्माण के सम्बन्ध में भवन निर्माताओं का दृष्टिकोण ज्ञात करने का प्रयास किया गया।

मुख्य शब्द : प्राचीन भवन,समृद्धि,चुम्बकीय सिद्धान्त,आन्तरिक सज्जा,वास्तु सम्मत।

प्रस्तावना

आवास हमारी मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है जिसकी कामना हर परिवार करता है एवं अपने जीवन काल में भवन निर्माण हेतु प्रयास भी करता है चाहें भवन बड़ा हो या छोटा परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति, सन्तुष्टि एवं सुख की कामना हर भवन निर्माता की होती है। इनकी पूर्ति हेतु भवन निर्माण से भवन सज्जा तक हर महत्वपूर्ण बातों का ध्यान रखता है जिसमें भूखण्ड का चयन, स्थिति, निर्माण सामग्री, कमरों की स्थिति, आन्तरिक सज्जा, रंग चयन फर्नीचर सभी भवन के आवश्यक तत्व हैं इन्हीं में एक महत्वपूर्ण तत्व है वास्तुशास्त्र।

वर्तमान समय में वास्तु का प्रचलन बढ़ा है जिसका मुख्य कारण है वास्तु का अधिक प्रचार प्रसार अधिकांशतः हम समाचार–पत्र पत्रिकाओं में वास्तु संबंधी लेख पढ़ते रहते हैं जिसमें बताया जाता है यदि भवन वास्तु सम्मत होगा तो उसमें रहने वाले व्यक्ति सुख, धन, धान्य से समृद्ध होंगे यही कारण है कि आधुनिक समय में जो भवन निर्माण किये जा रहे हैं इसमें लोग वास्तु को भी ध्यान में रखते हैं। और वास्तु शास्त्रियों से सलाह लेते हैं वहीं जिन लोगों के मकान वास्तु सम्मत नहीं हैं वह इसके हानिकारक प्रभावों के बारे में सोचकर चिंतित भी होते हैं।

वास्तु कोई आधुनिक शास्त्र नहीं है इसका उल्लेख हमें प्राचीन ग्रन्थों में भी मिलता है यदि हम हमारी प्राचीन ऐतिहासिक इमारतों का अध्ययन करें तो पायेंगे कि उनका निर्माण वास्तु अनुरूप ही किया गया है जो कि दर्शाता है प्राचीन समय में भी वास्तु को महत्व दिया जाता था। परन्तु इसका ज्ञान जन सामान्य को नहीं था। प्राचीन समय में वास्तु ज्योतिष का एक अंग था इसके अनतर्गत सम्पूर्ण देश, नगर, इनमें स्थित छोटे बड़े भवन तथा भवन के अन्दर सम्पादित होने वाले विभिन्न कार्य–व्यापार एवं सामग्री का दिशा निर्धारण आदि का समावेश होता है। वास्तु की अनुकूलता मनुष्य के जीवन में सुख शान्ति व समृद्धि का समावेश करती है भवन में अग्नि स्थान, जल स्थान, पूजा गृह, शयन कक्ष, हवा व धूप की स्थिति, मार्ग आदि का चिंतन करना वास्तु शास्त्र का विषय क्षेत्र है। वर्तमान समय में भी लोग वास्तु को ज्योतिष से जोड़ते हैं जबकि वास्तुशास्त्र पूरी तरह एक वैज्ञानिक पद्धति है जो भौतिक शास्त्र के चुम्बकीय सिद्धान्त पर आधारित है।

चुम्बकीय सिद्धान्त दो तत्वों पर आधारित है चुम्बकीय ऊर्जा व ब्रह्माण्डीय ऊर्जा का स्त्रोत प्रकाश है। इसे प्रकाश ऊर्जा भी कहते हैं। पृथ्वी के चुम्बकीय प्रभाव का प्रमाण इसी से मिलता है कि जो लोग चुम्बकीय ध्रुवों के विपरीत शयन करते हैं ऐसे लोग रात भर करवटें बदलते रहते हैं तथा सुबह तनाव पूर्ण उठते हैं। वैज्ञानिक परीक्षणों से यह सिद्ध हो चुका है कि मनुष्य का शरीर चुम्बकीय तरंगों से प्रभावित होता है और स्वयं भी सूक्ष्म तरंगे उत्सर्जित करता है।

उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य प्राचीन भवनों का वास्तु सम्मत बनाने हेतु भवन निर्माता के दृष्टिकोण का अध्ययन करना है। वर्तमान समय में वास्तु के प्रति रूझान बड़ा है नये भवन निर्माता भवन निर्माण के समय वास्तु को महत्व देते हैं वहीं प्राचीन भवन निर्माता भी वास्तु अनुरूप भवन में परिवर्तन करना चाहते हैं इन्हीं परिवर्तन को लेकर भवन निर्माताओं के दृष्टिकोण का अध्ययन करना शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य हैं।

शोध प्रविधि

तथ्यों के संकलन हेतु प्रश्नावली का निर्माण किया गया जिसमें शोध के उद्देश्यों को पूर्ण करने वाले सभी प्रश्नों का समावेश किया गया। प्रस्तुत शोध पत्र में पूर्व परीक्षण द्वारा साक्षात्कार अनुसूची में निर्मित प्रश्नों की पुष्टि और कमी में आवश्यक संशोधन कर इसे अध्ययन के लिये उपयोगी बनाया गया। प्राचीन भवनों को वास्तु सम्मत बनाने के लिए किए जाने वाले परिवर्तनों में उत्तरदाताओं की सहमति–असहमति ज्ञात करने के लिए कोई मान का प्रयोग किया गया।

तालिका क्र. 1

प्राचीन भवनों को वास्तु सम्मत बनाने के लिये किये जाने वाले परिवर्तनों से सहमत–असहमत उत्तरदाता

क्र.	वास्तु सम्मत बनाने के लिए किये गये परिवर्तन	सहमत प्रतिशत	असहमत प्रतिशत	योग प्रतिशत
1.	तोड़फोड़ द्वारा पुनः निर्मित कर	15	85	33.3
2.	महत्वपूर्ण अग्नि, जल, वायु की, दिशाओं में परिवर्तन कर	48	52	33.3
3.	आन्तरिक सज्जा अथवा उपसाधनो में वास्तु अनुरूप परिवर्तन द्वारा	87	73	33.3
	योग–	100	100	100

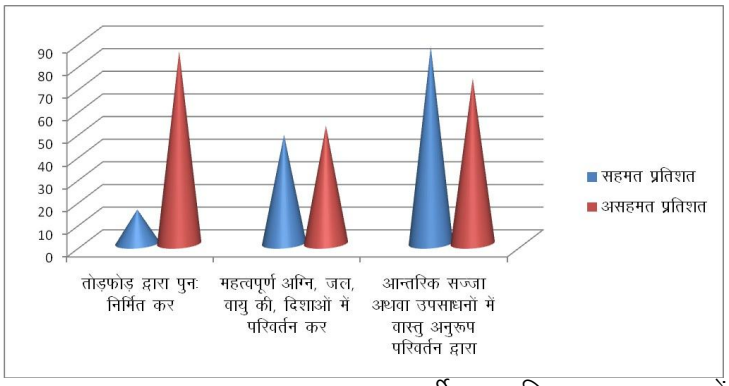

तालिका क्र. 2

प्राचीन भवनों को वास्तु सम्मत बनाने के लिये किये जाने वाले परिवर्तनों से सहमत–असहमत उत्तरदाताओं के सम्बन्ध की सार्थकता का स्तर

क्र.	वास्तु सम्मत बनाने के लिए किये गये परिवर्तन	सहमत प्रतिशत	असहमत प्रतिशत	योग प्रतिशत
1.	तोड़फोड़ द्वारा पुनः निर्मित कर	15	85	100
2.	महत्वपूर्ण अग्नि, जल, वायु की, दिशाओं में परिवर्तन कर	48	52	100
3.	आन्तरिक सज्जा अथवा उपसाधनों में वास्तु अनुरूप परिवर्तन द्वारा	87	13	100
	योग–	150	150	300

X^2 = 103.92 Df = 2

P<0.01 पर सार्थक उपरोक्त तालिका का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि उत्तरदाता प्राचीन भवनों को वास्तु सम्मत बनाने हेतु आनतरिक सज्जा व उपसाधनों में परिवर्तन को अधिक महत्व देते हैं। इसके अध्ययन हेतु वास्तु अनुरूप परिवर्तनों को चार वर्गों में वर्गीकृत किया गया इसमें सहमत व असहमत उत्तरदाताओं की संख्या क्रमशः तोड़ फोड़ द्वारा पुनः निर्मित का 15 व 85, अग्नि, जल, वायु तत्वों में परिवर्तन कर 48 व 52, आन्तरिक सज्जा अथवा उपसाधनों में परिवर्तन कर 87 व 13 पाई गई उनका काई मान ज्ञात करने पर 103.92 प्राप्त हुआ जो 0.01 पर अपनी सार्थकता प्रदर्शित करता है।

ग्राफ दर्शाता है कि वास्तु अनुरूप प्राचीन भवन में परिवर्तन से अधिकांश भवन निर्माता सहमत हैं परन्तु वह तोड़फोड़ की अपेक्षा आंतरिक गृह सज्जा अथवा उपसाधनों में वास्तु अनुरूप परिवर्तन से सहमत हैं। शोध के दौरान पाया गया कि उच्च वर्ग के गृह निर्माता निम्न वर्ग के गृह निर्माता की अपेक्षा वास्तु को अधिक महत्व देते हैं। अतः वास्तु अनुरूप परिवर्तन में गृह निर्माताओं में सकारात्मक दृष्टिकोण देखने को मिला।

निष्कर्ष

यदि मनुष्य मकान को इस प्रकार से बनाए, जो प्राकृतिक व्यवस्था के अनुरूप हो, तो प्राकृतिक प्रदूषण की समस्या काफी हद तक दूर हो सकती है, जिससे मनुष्य प्राकृतिक ऊर्जा स्रोतों को, भवन के माध्यम से, अपने कल्याण के लिए इस्तेमाल कर सके। पूर्व में उदित होने वाले सूर्य की किरणों का भवन के प्रत्येक भाग में प्रवेश हो सके और मनुष्य ऊर्जा को प्राप्त कर सके, क्योंकि सूर्य

की प्रातःकालीन किरणों में विटामिन–डी का बहुमूल्य स्रोत होता है, जिसका प्रभाव हमारे शरीर पर रक्त के माध्यम से, सीधा पड़ता है। इसी तरह मध्याह्न के पश्चात् सूर्य की किरणें रेडियधार्मिता से ग्रस्त होने के कारण शरीर पर विपरीत (खराब) प्रभाव डालती हैं। इसी लिए भवन निर्माण करते समय भवन का 'ओरिएंटेशन' इस प्रकार से रखा जाना चाहिए, जिससे मध्यांत सूर्य की किरणों का प्रभाव शरीर एवं मकान पर कम से कम पड़े। दक्षिण–पश्चिम भाग के अनुपात में भवन निर्माण करते समय पूर्व एवं उत्तर के अनुपात की सतह को इसलिए नीचा रखा जाता है, क्योंकि प्रातःकाल के समय सूर्य की किरणों में विटामिन डी, एफ एवं विटामिन ए रहते हैं। रक्त कोशिकाओं के माध्यम से जिन्हें हमारा शरीर आवश्यकतानुसार विटामिन डी ग्रहण करता रहे। यदि पूर्व का क्षेत्र पश्चिम के क्षेत्र से नीचा होगा, अधिक दरवाजे, खिड़कियां आदि होने के कारण प्रातःकालीन सूर्य की किरणों का लाभ पूरे भवन को प्राप्त होता रहेगा। पूर्व एवं उत्तर क्षेत्र अधिक खुला होने से भवन में वायु बिना रुकावट के प्रवेश करती रहे और चुंबकीय किरणें, जो उत्तर से दक्षिण दिशा को चलती हैं, उनमें कोई रुकावट न हो और दक्षिण–पश्चिम की छोटी–छोटी खिड़कियों से धीरे–धीरे वायु निकलती रहे। इससे वायु मंडल का प्रदूषण दूर होता रहेगा।

शोध कार्य हेतु ग्वालियर शहर के 10 वार्ड के 300 भवन निर्माताओं का देवनिदर्शन विधि द्वारा चुनाव किया गया सर्वेक्षण द्वारा निकाले गये परिणाम निम्नानुसार हैं।

उपसंहार

शोध के पश्चात् ज्ञात हुआ कि वर्तमान में वास्तु को लेकर भवन निर्माताओं का दृष्टिकोण सकारात्मक है नये भवन निर्माता भवन निर्माण में वास्तु को भी महत्व दे रहे हैं वहीं प्राचीन भवन निर्माता भी अपने भवन में वास्तु अनुरूप परिवर्तन करना चाहते हैं।

अतः गृह निर्माण करते समय वास्तु का अध्ययन करें प्रयोग करें व वास्तुशास्त्रियों का मार्गदर्शन भी लें पर भ्रम जाल में न फसें। गृह निर्माण में मुख्य तत्व प्रकाश, वायु की उत्तम व्यवस्था कर व वैज्ञानिक महत्व को समझ अपने सार्मथ्य के अनुसार वास्तु का प्रयोग कर इसका लाभ उठायें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Agrawala & Agrawala (2000). Vastu Shastra
2. Agen T.C. (1998). The House
3. B.B. Dutt (1925), Town Planning in Ancient India at Google Books .
4. D. N. Shukla, 1993. Vastu-Sastra: Hindu Science ofArchitecture,Munshiram Manoharial Publishers.
5. Deshpande R.S. (1960)**.** Modern Ideal Homes for India
6. Rutt Anna Jdong (2001). Home Furnishing.
7. Volwahsen A. 1969/1994. Living architecture: Indian. In *Architecture of the World*, Series 7, Stierlin H (ed.). Evergreen: Köln, Germany.
8. द्विवेदी डॉ. भोजराज (1968)**.**सम्पूर्ण वास्तुशास्त्र द्वितीय संस्करण